भारतीय दर्शन का विभाजन

B.A.(H) II Year　　Lecture-3　　1

Paper-3, Unit-II

1 'प्रस्तावना'

भारतवर्ष संसार के सभ्य देशों में सबसे प्राचीन और सब में अग्रगण्य है। भा - ज्ञान में, रत - सँल्लग्न अर्थात् प्राचीन तथा आधुनिकता को समेटे हुए जो तत्त्वज्ञान के अर्जन में निरन्तर व्याप्त है, वही भारतवर्ष है। राष्ट्र के विद्याप्रेमी भद्रजनों की चिरन्तन ज्ञानसाधना से प्रमाणित होता है कि भौतिक विज्ञान के इस युग में भी उच्च कोटि के अनेकों शास्त्र हमें उपलब्ध हो रहे हैं। भारतीय ज्ञान परम्परा समृद्ध है। डॉ० रजनीश मिश्र ने सर्वदर्शनसङ्ग्रह ग्रन्थ के आधार पर अपनी पुस्तक 'Buddhist Theory of meaning and Literary Analysis' में पृष्ठ संख्या 25 पर भारतीय दर्शनों का वैज्ञानिक एवं तार्किक विभाजन आरेख प्रस्तुत किया है -

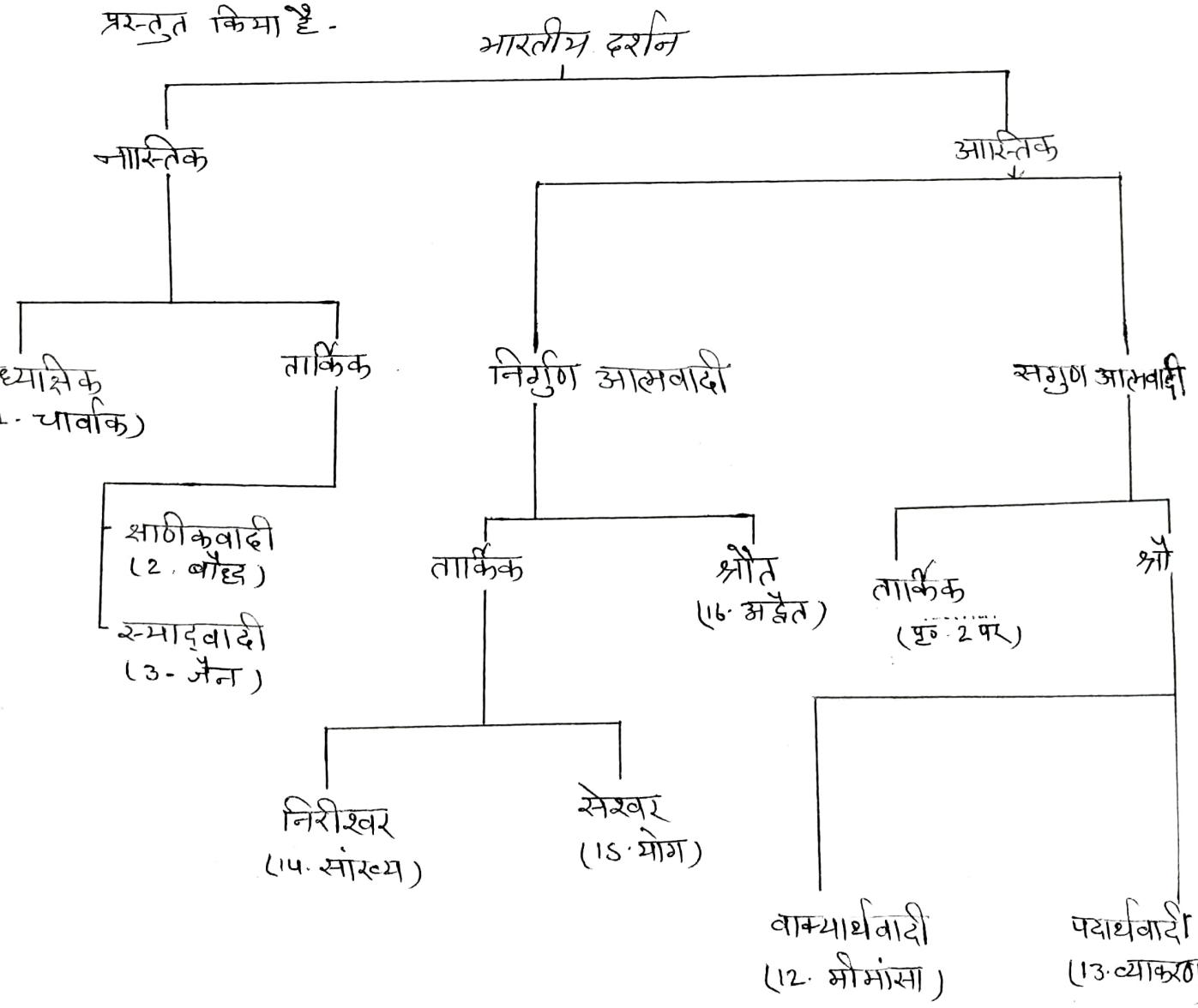

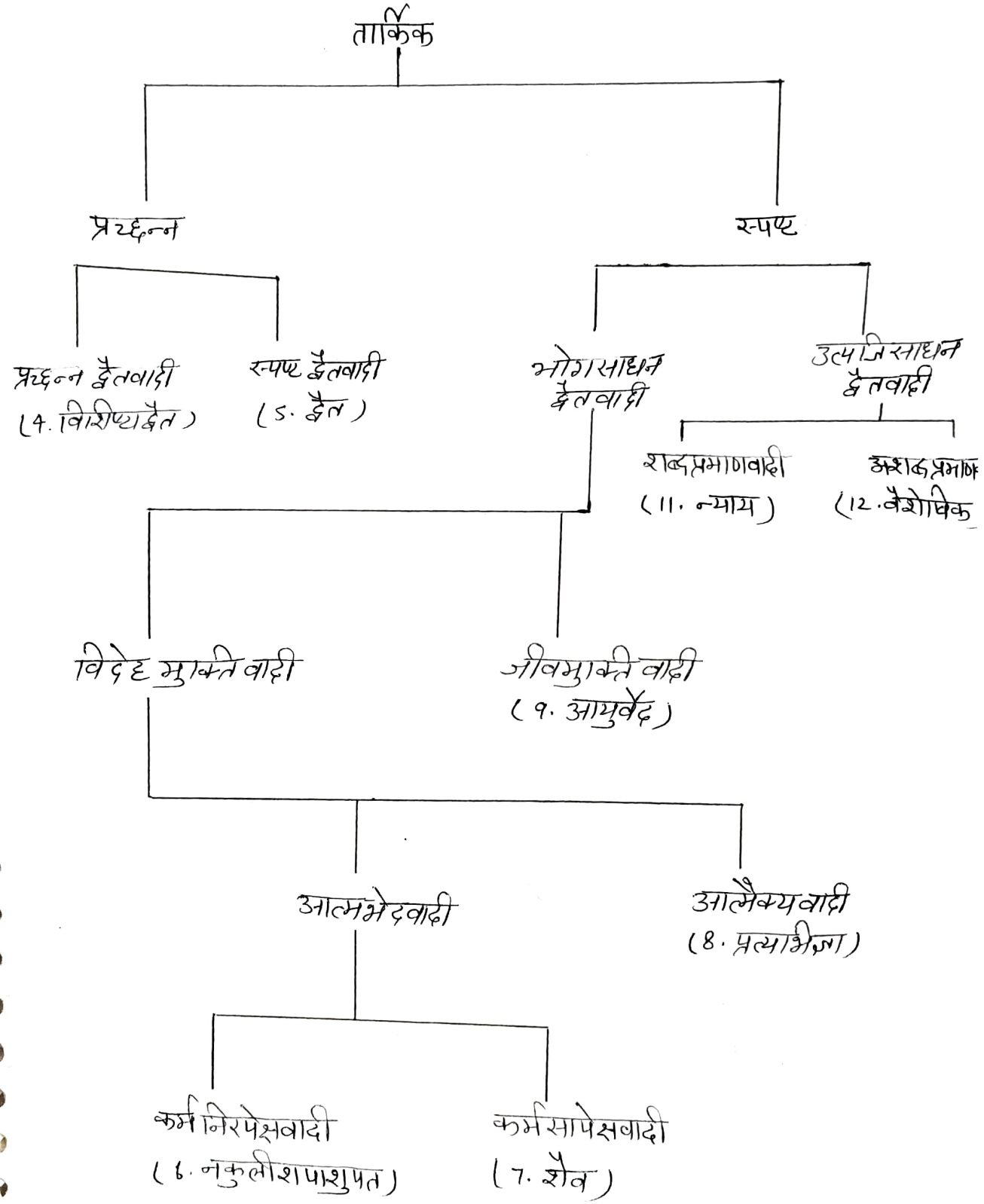
तार्किक
प्रच्छन्न
स्पष्ट
प्रच्छन्न द्वैतवादी
(4. विशिष्टाद्वैत)
स्पष्ट द्वैतवादी
(5. द्वैत)
भोगसाधन द्वैतवादी
उत्पत्तिसाधन द्वैतवादी
शब्दप्रमाणवादी
(11. न्याय)
अशब्दप्रमाण
(12. वैशेषिक
विदेहमुक्तिवादी
जीवन्मुक्तिवादी
(9. आयुर्वेद)
आत्मभेदवादी
आत्मैक्यवादी
(8. प्रत्याभिज्ञा)
कर्मनिरपेक्षवादी
(6. नकुलीशपाशुपत)
कर्मसापेक्षवादी
(7. शैव)